International Journal of Arts & Education Research

राजनीतिक विकास : सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

डॉद्म कुद्म पंकज कुमारी*[1], कपिल कुमार[2]

[1]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, ट्रांसलेम कॉलिज ऑफ लॉ,मेरठ।

[2]एमद्म एद्म, राजनीति विज्ञान, ट्रांसलेम कॉलिज ऑफ लॉ,मेरठ।

स ार

यह सर्वविदित है कि द्वितीय वि-वयुद्व के प-चात् एि-या, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के राज्य साम्राज्यवाद के चंगुल से धीरे-धीरे मुक्त हो रहे थे इससे वि-वपटल पर अनेक स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ। इन नवोदित राज्यों को सामूहिक रूप से तृतीय वि-व की संज्ञा दी गयी। इनकी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियाँ पि-चमी विकसित राज्यों की परिस्थितियों से सर्वथा भिन्न थीं तथा इनकी राजनीतिक व्यवस्था में स्थिरता व व्यवस्थित क्रम का अभाव था जिसके कारण राजनीतिक विद्वानों के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गईं क्योंकि इन राज्यों की राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन प्रचलित परम्परागत सिद्धान्तों व दृश्टिकोणों के आधार पर करना कठिन था। इनका तानाबाना बेहद जटिल था और राजनीति-ाास्त्रियों के सामने इनसे सम्बन्धित अनेक प्र-न उपस्थित हो रहे थे, जैसे- इन राश्ट्रों में राश्ट्रवाद का स्वरूप कैसा है? इनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तथा सांस्औति क समस्याएं किस प्रकार की हैं? इन दे-ों में आर्थिक पिछड़ेपन ने राजनीति की प्रऔति को किस प्रकार प्रभावित किया है? इन दे-ों में संवैधानिक लोकतंत्र सफल हो पाने की कितनी सम्भावनाएं हैं? इन सभी प्र-नों के संतोशजनक उत्तर ढूँढने के लिए नयी अवधारणा अथवा उपागम की आव-यकता महसूस की गयी जो इन तृतीय वि-व के दे-ों की आंतरिक राजनीति, उनकी सभ्यताओं, संरचनाओं एवं संस्औति को *समझने* में सहायक हो सकें। इसका सीधा परिणाम '**राजनीतिक विकास उपागम**' का उदय रहा।

राजनीतिक वैज्ञानिकों ने ऐसे राश्ट्रों के अध्ययन में वि-ोश रूचि लेना :ारू किया। नव स्वतंत्र राश्ट्रों की संख्या में वृद्धि होना और उन राश्ट्रों में स्वतंत्र राजनीतिक प्रणाली का जन्म होना परिवर्तन का संकेत था। राजनीति-ाास्त्रियों ने इस प्रक्रिया को '**विकास**' :ाब्द देकर तथा राजनीतिक व्यवस्था से जोड़कर राजनीतिक विकास की ओर चलने के लिए अग्रसर किया। नये राश्ट्रों का उदय होना और इन राश्ट्रों में राश्ट्रीय राज्य निर्माण की प्रक्रिया का :ाुरू होना '**राजनीतिक विकास**' की उत्पत्ति था। अतः '**राजनीतिक परिवर्तन**' का दूसरा नाम ही '**राजनीतिक विकास**' है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक आधुनिकीकरण नाम भी '**राजनीतिक विकास**' के लिए दिया गया है।

'**राजनीतिक विकास**' :ाब्द का अर्थ व परिभाशा देने से पहले '**विकास**' :ाब्द का अर्थ स्पश्ट करना आव-यक है क्योंकि विकास की भूमिका स्पश्ट होने के प-चात ही '**राजनीतिक विकास**' उपागम को स्पश्ट किया जा सकता है। '**ऑक्सफोर्ड इंग्लि-ा डिक-ानरी**' में विकास :ाब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया गया है-

1. एक क्रमिक उन्मूलन

2. किसी भी वस्तु की अधिकतम जानकारी।

3. जीवाणु का विकास

इस अर्थ में हम बच्चे के विकास, बीमारी के विकास, व्यक्तित्व के विकास अथवा स्थिति के विकास की बात कर सकते हैं। विकास को कुछ लोगों ने सामाजिक परिवर्तन का ही समानार्थी बताया है। अतः विकास :ाब्द से तात्पर्य एक ओर तो व्यापक रूप से अनि-चित लक्ष्य की ओर प्रगति है तथा दूसरी ओर निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ना है।[1]

राजनीतिक विकास का अर्थ

विद्वानों में मतैक्य के अभाव के कारण राजनीतिक विकास की सर्वमान्य परिभाशा व सर्वमान्य अर्थ देना दुश्कर कार्य है। क्योंकि लगभग प्रत्येक विद्वान ने इसका अर्थ अपनी सुविधानुसार अलग-अलग लगाया है।

'राजनीतिक विकास' से अभिप्राय राज्य की राजनीतिक व्यवस्था में आए ऐसे परिवर्तन से है जिसके कारण उसकी :ाासन प्रणाली में जनता की अधिकाधिक भागीदारी सुनि-चत हो तथा जनकल्याण में भी वृद्धि हो। **स्पर्ट, इमर्सन, कॉलमैन तथा कटराईट** ने राजनीतिक विकास को आर्थिक विकास की पूर्व :ार्त के रूप में समझने का प्रयास किया है, लेकिन इसे भी तर्कसंगत नही माना गया क्योंकि एि-या तथा अफ्रीका के अनेक दे-ों में राजनीतिक विकास ने आर्थिक विकास की प्रक्रिया को अवरूद्ध ही किया है। **रोस्टोव** आदि विद्वानों ने इसे **'औद्योगिक समाज की राजनीति'** के समरूप माना है। **गुन्नार मिर्डल** और **लर्नर** जैसे समाज-ाास्त्रियों ने राजनीतिक विकास को **'राजनीतिक आधुनिकीकरण'** का पर्याय बताया है। इनके अनुसार राजनीतिक विकास पि-चमी दे-ों की राजव्यवस्थाओं को सामने रखकर इनका अनु-ीलन करने की प्रक्रिया है।[2]

इन आद-ों में राजनीतिक व्यवस्था में जनता की सहभागिता, कानून का :ाासन, नागरिकता आदि प्रमुख है। लेकिन यह भी सही दृश्टिकोण नहीं है, क्योंकि सभी पि-चमी समाजों को आधुनिक नही कहा जा सकता है। **रिग्स** जैसे विद्वान इसे **'प्र-ाासनिक तथा वैधानिक विकास'** के आधार पर देखते हैं तो कुछ विद्वान जैसे **विण्डर** आदि इसे राश्ट्र-राज्य के रूप में देखते हैं। अतः कह सकते है कि **'राजनीतिक विकास'** के अर्थ को लेकर विद्वानों में व्यापक मतभेद दिखाई पड़ते हैं।[3]

उपर्युक्त अध्ययन के प-चात **'राजनीतिक विकास'** का अर्थ निम्न प्रकार से स्पश्ट किया जा सकता है।

1. जन-सहभागिता का सम्बन्ध भी राजनीतिक विकास से है।

2. औद्योगिक विकास को राजनीतिक आधुनिकीकरण व राजनीतिक विकास की संज्ञा दी जा सकती है।

3. जन :ाक्ति का राजनीतिक विकास में व्यापक अध्ययन किया जा सकता है।

4. राजनीतिक व्यवस्था में प्रयुक्त आन्तरिक, बाहरी तत्वों का विकास भी राजनीतिक विकास में :ाामिल है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

5. नियोजन के माध्यम से राश्ट्रीय समस्याओं का निराकरण करना और राश्ट्र का सर्वांगीण विकास करना ही राजनीतिक विकास है। अतः लोकतांत्रिक प्रणाली के अनुकूल निि-चत सिद्धान्तों के अनुसार चलने की प्रक्रिया का नाम ही राजनीतिक विकास है। राजनीतिक विकास के बहुरूपी और बहुरंगी अर्थ को कुछ विद्वानों ने :ाब्दों में समेटने की चेश्टा की है जो इस प्रकार है-

परिभाशा-

ल्यू-ियन पाई के अनुसार- ''राजनीतिक विकास, संस्औति का विस्तार और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकूल बनाने उन्हें उनके साथ मिलाने या उनके साथ सामंजस्य बैठाना है।"[4]

एस0 एन0 इजेनस्टेड के अनुसार- "राजनीतिक विकास में एक राजनीतिक व्यवस्था की विभिन्न परिवर्तन-ाील राजनीतिक मांगों और संगठनों को आत्मसात् करने की क्षमता निहित है। इसके अन्तर्गत उन परिवर्तन-ाील राजनीतिक मांगों और समस्याओं को सुलझाने का वह कौ-ाल :ाामिल है जिन्हें एक राजनीतिक व्यवस्था जन्म देती है अथवा जिन्हें इसे बाहरी स्रोतों से आत्मसात् करना पड़ता है।''[5]

विलियम चैम्बर्स के अनुसार- "राजनीतिक विकास को एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की ओर अग्रसर समझा जा सकता है जिसमें कि उन समस्याओं के संचालन की क्षमता हो जिनका उसे सामना करना पड़ता है तथा जिसमें संरचनाओं के विभेदन एवं कार्यों की वि-िश्टता हो और जो उत्तरोत्तर केन्द्रित तथा स्वयं को रखने की योग्यता रखता हो।"[6]

आमण्ड के अनुसार राजनीतिक विकास इस प्रकार है- "राजनीतिक विकास, :ाासन की संरचना में उत्तरोत्तर वि-िश्टीकरण और राजनीतिक संस्औति की उत्तरोत्तर लौकिकीकरण को कहते हैं, जिसमें राजनीतिक व्यवस्था अत्यन्त सक्षम होती चली जाती है, ताकि समस्याओं को हल करने में प्रयासरत हो।"[7]

डब्ल्यू जे0एम0 मेर्केंजी के अनुसार- "समाज के उच्चस्तरीय अनुकूलन के प्रति अनुकूल होने की क्षमता का नाम ही राजनीतिक विकास है। जिसमें निम्न समाज उच्च समाज के समकक्ष होने का प्रयास व क्षमता दोनों प्राप्त करते हैं, इसे ही राजनीतिक विकास माना जाना चाहिए।''[8]

जाग्वाराइव ने राजनीतिक विकास की परिभाशा देते हुए लिखा है कि "राजनीतिक विकास एक प्रक्रिया के रूप में राजनीतिक आधुनिकीकरण तथा राजनीतिक संस्थाकरण का जोड़ है।"[9]

एफ0डब्ल्यू रिग्स ने लिखा है कि राजनीतिक विकास का अभिप्राय मुख्यतः लोकतन्त्रीकरण की प्रक्रिया अथवा सरकार पर लोकप्रिय नियंत्रण के विकास से लिया जाता है। दूसरे :ाब्दों में राज्य के कार्यों, :ाक्ति के परिकलन और उसके परिणामों की सहभागिता में वृद्धि, राजनीतिक विकास की नि-ाानी है। इस अर्थ में :ाासकों द्वारा नागरिकों का अनु-ाासनात्मक संगठन उतना ही राजनीतिक है जितना कि नागरिकों द्वारा :ाासकों से माँगें करना। इस दृश्टि से एक आधुनिक सर्वाधिकारवादी साम्राज्य उतना ही राजनीतिक है जितना कि एक

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

पूर्ण लोकतन्त्रीय राज्य। दोनों ही परम्परागत व्यवस्था से भिन्न हैं। यहाँ राजनीतिक निर्णयों में जनता की सहभागिता बहुत कम होती है उस पर :ाासक ध्यान नही देते।[10]

जॉन टी0 डोर्सी ने लिखा है कि "राजनीतिक विकास उन :ाक्ति संरचनाओं और प्रक्रियाओं में परिवर्तन की ओर संकेत करता है जो सामाजिक व्यवस्था के :ाक्ति रूपान्तरण स्तरों में परिवर्तन के सहभागी होते हैं, चाहें ये रूपान्तरण स्तर मुख्य रूप से अपने ही राजनीतिक सामाजिक अथवा आर्थिक अभिव्यक्ति में या इनके विविध युग्मों में परिवर्तित होते हों।"[11]

प्रसिद्ध विद्वान **ऑमण्ड तथा पावेल** के अनुसार- "राजनीतिक विकास, राजनीतिक संरचनाओं की अभिवृद्धि, विभेदीकरण और राजनीतिक संस्औति का संबधित लौकिकीकरण है।"[12]

उपरोक्त सभी परिभाशाओं का अध्ययन करने पर यही निश्कर्श निकलता है कि प्रत्येक विद्वान द्वारा दिए गए विचारों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई पड़ती है। सभी ने अपने-अपने अनुसार **"राजनीतिक विकास"** को :ाब्दों की सीमा में बाँधने का प्रयास किया है। सभी ने एक ही प्रकार के विकास लक्षणों को अलग-अलग ढंग से विवेचित किया है। अतः राजनीतिक विकास की परिभाशा हम सरल :ाब्दों में इस प्रकार कर सकते हैं- ''राजनीतिक विकास, राजनीतिक संरचनाओं का विभिन्नकरण और वि-ोशीकरण तथा राजनीतिक संस्औति का ऐसा बढ़ता हुआ लौकिकीकरण है जिससे जनता में समानता और राजनीतिक व्यवस्था में कार्यक्षमता तथा उसकी उपव्यवस्था में स्वायतत्ता आ सकती है।''

राजनीतिक विकास की प्रऔति को लेकर इसकी व्याख्याओं के विवाद के साथ-साथ एक और विवाद यह भी है कि क्या राजनीतिक विकास एकमार्गी है या बहुमार्गी है? अतः राजनीतिक विकास के सन्दर्भ में दो दृश्टिकोण स्पश्ट रूप से विकसित हुए हैं-

1. एकमार्गी दृश्टिकोणः- राजनीतिक विकास पर एकमार्गी दृश्टिकोण रखने वाले विचारक यह मानते हैं कि सभी राश्ट्र विकास के मार्ग से होते हुए आगे की ओर बढ़ रहे हैं। इस सम्बन्ध में पहली मान्यता है कि सभी राज्यों में राजनीतिक विकास का केवल एक ही मार्ग है। दूसरी मान्यता है कि दुनिया के सभी राश्ट्र विकास के इस एक मार्ग पर विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं। तीसरी मान्यता यह है कि राजनीतिक विकास के लिए प्रयत्न-ील राश्ट्रों के सामने विकसित राश्ट्रों का आद-र्ा है। इस दृश्टिकोण के समर्थकों के अनुसार ऐसे तीन आद-र्ा हैं जिनमें से किसी एक आद-र्ा को विकसित राजनीतिक व्यवस्था का आद-र्ा माना जा सकता है। प्रथम आद-र्ा पा-चात्य राज्य, दूसरा सोवियत संघ तथा तृतीय आद-र्ा चीन है।[13]

स्पश्टतया राजनीतिक विकास में सभी राश्ट्र, राश्ट्रीय विकास के मार्ग से गुजरना चाहते हैं और इनका विकास करने का केवल एक ही मार्ग है लेकिन फिर भी प्रत्येक राश्ट्र के विकास मार्ग की अवस्था में अन्तर हो सकता है- जैसे पि-चमी राश्ट्रों के मार्ग अलग हैं, रूस का अलग, चीन का मार्ग अलग, अरब दे-ों का मार्ग अलग तथा गुट निरपेक्ष राश्ट्रों का मार्ग पृथक है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

2. बहुमार्गी दृष्टिकोणः- विकास के दूसरे दृश्टिकोण के समर्थक राजनीतिक विकास को बहुमार्गी मानते हैं और तीन तथ्य इसकी पुश्टि के लिए देते हैं। पहली मान्यता है कि राजनीतिक विकास बहु-दि-ाई व बहुआयामी है, क्योंकि, स्वयं विकास की अनेक दि-ाएं होती हैं। राजनीतिक विकास सामान्य विकास की धारा में समाया हुआ है किन्तु स्पश्ट रूप से वि-िश्ट धारा है। दूसरी मान्यता पहली का परिणाम कही जा सकती है। यह मान्यता राजनीतिक विकास को बहुमार्गी मानती है। क्योंकि ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्औतिक और राजनीतिक परिस्थितियों से विकास के उद्दे-य व लक्ष्य निर्धारित होते हैं, अतः विकास की तरह ही राजनीतिक विकास भी बहुमार्गी है। इन दो मान्यताओं से तीसरी मान्यता उभरती है कि राजनीतिक व्यवस्थाओं के सामने कोई एक सा विकास आद-र्ा नही होता है। राजनीतिक व्यवस्थाएं अनेक आद-र्ों को ग्रहण करते हुए बहुमुखी विकास करना चाहती हैं, जिससे निम्न स्तर का जीवन उच्च स्तर की ओर विकसित होता है।[14]

राजनीतिक विकास के स्तर या अवस्थाएँ अथवा चरण

राजनीतिक विकास के स्तर या अवस्थाएँ या चरणों का विचार अर्थ-ाास्त्र से प्रभावित रहा है। रोस्टोव ने अपनी पुस्तक **'स्टेजेज ऑफ इकोनोमिक ग्रोथ'** में आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों के विचार का विकास किया है। अतः इससे यह प्रेरणा मिली कि राजनीतिक विकास के विभिन्न स्तरों के बारे में भी ज्ञात किया जाए। बाद में राजनीतिक विचारक भी यह मानने लगे कि राजनीतिक विकास के भी सुनि-चित स्तर होते हैं। हर समाज में आर्थिक स्तरों के अनुक्रम के अनुसार अव-य ही राजनीतिक विकास के स्तर होते हैं। रोस्टोव के विचारों का राजनीतिक विकास के स्तर-अध्ययन पर नि-चित प्रभाव माना जा सकता है। अतः राजनीतिक विकास के विभिन्न स्तरों के सम्बन्ध में कुछ विचारकों के विचारों का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है-

हटिंगटन के विचार-

हटिंगटन के अनुसार राजनीतिक विकास के तीन चरण या अवस्थाएं मानी जाती हैं-

1. सत्ता की बुद्धिसंगतता का स्तर, जिसमें अनेक स्थानीय सत्ताओं के स्थान पर एक केन्द्रीय सत्ता का निर्माण हो जाता है।

2. नए राजनीतिक कार्यों का विभिन्नीकरण और उनके लिए वि-िश्ट संरचनाओं का विकास।

3. अभिवृद्धि सहभागिता जो परिसरीय सामाजिक समूहों के समाज के भागों को धीरे-धीरे केन्द्रीय सत्ता में सम्मिलित करने का स्तर है।

हटिंगटन की मान्यता है कि विकास की वह प्रक्रिया तभी सम्भव होती है जब ये तीनों क्रिया स्तर क्रमिक रूप से उपलब्ध किये जायें अर्थात् प्रथम के बाद दूसरा और फिर तीसरा स्तर आ सकता है। उसने यह स्पश्ट किया है कि इन तीनों का एक दूसरे के ऊपर नीचे या साथ-साथ प्रचलन घातक होता है और उससे राजनीतिक विकास नही, राजनीतिक पतन आता है। वह यह स्वीकार करता है कि यह तीनों एक साथ एक

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

दूसरे के ऊपर प्रचलित हो सकते हैं। जैसा आज अधिकां-ा विकास-ाील राज्यों में हो रहा है, किन्तु उस अवस्था में यह विकास की घातक अवस्था सिद्ध होगी।[15]

आमण्ड के विचार -

आमण्ड ने राजनीतिक विकास की चार अवस्थाएं मानी हैं।

1. राज्य निर्माण का स्तर अर्थात सत्ता का निर्माण तथा विभिन्न समूहों का केन्द्रीय सत्ता के अधिकार क्षेत्र में एकीकरण होना।

2. राश्ट्र निर्माण का स्तर अर्थात राश्ट्र के प्रति भक्ति व निश्ठा उत्पन्न होना।

3. सहभागिता का स्तर अर्थात् व्यक्ति एवं समूहों का राजनीतिक प्रक्रिया में व्यापक रूप से भागीदार होना।

4. वितरण का स्तर अर्थात सामाजिक जीवन के लिए लाभों को पुनः निर्धारण की अनेक विधियों द्वारा सबकी पहुँच में लाना सम्मिलित होता है। आमण्ड की मान्यता है कि जिन समाजों में राजनीतिक विकास का अन्तिम स्तर आ गया है वे सब इसी अनुक्रम से एक स्तर के बाद दूसरे स्तर में पहुँचे हैं और विकास-ाील राज्यों में यही अनुक्रम आव-यक है।[16]

आरगेन्स्की के विचार-

आरगेन्स्की ने अपनी पुस्तक ैजंहमे वि च्वसपजपबंस क्मअमसवचउमदजश में राजनीतिक विकास को राश्ट्रीय गन्तव्यों के लिए राश्ट्र के मानवीय और भौतिक स्रोतों का उपयोग करने में सरकार की बढ़ती हुई कार्यक्षमता के आधार पर समझने का प्रयत्न किया है। उसके अनुसार राजनीतिक विकास स्वायत्त किन्तु अन्य विकासों (आर्थिक, सामाजिक और सांस्औतिक) से पूर्ण रूप से पृथक और स्वतंत्र प्रक्रिया नही है। राजनीतिक विकास आनुक्रमिक स्तर से ही होता है। राजनीतिक विकास के हर स्तर की अपनी वि-िश्टताएं होती हैं जो अन्य स्तर पर अधिक से अधिक आंि-क रूप में पाई जा सकती हैं। राजनीतिक विकास का एक स्तर पूर्ण रूप से प्राप्त होने के बाद ही उसके आगे के स्तर पर जाना सम्भव है अर्थात नगर विकास के अनुक्रम में पहले का स्तर पूर्णतया प्राप्त नही हुआ तो उससे आगे का स्तर कभी भी सफलतापूर्वक प्राप्त नही किया जा सकता। उसके अनुसार राजनीतिक विकास के चार स्तर हैं:-

1. आदिम एकीकरण की राजनीतिः- इस अवस्था में राश्ट्रीय सरकारें अपनी जनसंख्या पर प्रभाव-ाली राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करती हैं। इसमें राज्य के चारों तत्व जनसंख्या, नि-िचत भू-भाग, सरकार और सम्प्रभुता विद्यमान होते हैं।

2. औद्योगीकरण की राजनीतिः- राजनीतिक विकास का यह चरण औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं तथा सामाजिक, राजनीतिक जैसे परिवर्तनों से सम्बन्धित है जिसमें नए वर्ग निर्मित होते हैं, सहभागिता का विस्तार और अभिवृद्धि तथा राश्ट्रीय एकीकरण होता है। इसके तीन मॉडल हैं- बुर्जुआ मॉडल, स्टालिन का मॉडल तथा समन्वयी मॉडल।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

3. राश्ट्रीय लोक-कल्याण की राजनीतिः- इसमें जनता को :ाोशण से मुक्त रखा जाता है और पूंजी साधनों को व्यापक स्तर पर जनता में वितरित किया जाता है।

4. समृद्धि की राजनीतिः-समृद्धि की राजनीति का स्तर जो कि आजकल अमेरिका में आने लगा है। वह स्तर वैज्ञानिक प्रविधियों और अत्याधिक परिश्औात उपकरणों से अत्याधिक उत्पादकता का है जिसमें हरेक के लिए वस्तुओं की सामान्य उपलब्धि रहती है। यह राजनीतिक विकास की सबसे जटिल अवस्था है।

आइजेंन्सटाड के विचार-

राजनीतिक विकास के स्तरों और आधारभूत प्रचलनों को, अतीत की विकास-ील व्यवस्थाओं के ऐतिहासिक वि-लेशण और सामान्य सिद्धान्तों की अतीत की प्रक्रियाओं के आधार पर स्पश्ट किया है। वह राजनीतिक विकास की प्रक्रिया को 2 स्तरों में बाँटता है-

1. सीमित आधुनिकीकरण का स्तरः- जिसे वह पि-चमी दे-ों में अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के विकास के स्तर के साथ ऐतिहासिक दृश्टि से जोड़ता है।

2. जन आधुनिकीकरण का स्तरः- जिसे वह पि-चम में बीसवीं सदी के विकास के स्तर के साथ ऐतिहासिक दृश्टि से जोड़ता है।

राजनीतिक विकास की वि-ोशताएंः-

राजनीतिक विचारकों के अनुसार राजनीतिक विकास की वि-ोशताओं से सम्बन्धित विवेचन इस प्रकार है-

ल्यू-ियन पाई के अनुसार राजनीतिक विकास की तीन वि-ोशताएं होती हैं। उसकी परिभाशा के अनुसार राजनीतिक विकास का सम्बन्ध वि-ोशकर समानता, क्षमता और विभिन्नीकरण से है।

पाई के अनुसार राजनीतिक विकास की प्रमुख वि-ोशता राजनीतिक व्यवस्था के व्यक्तियों में समानता के प्रति सामान्य भावना का उत्पन्न होना है। समानता उसी अवस्था में मानी जाएगी जब राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के सभी लोगों को समान अवसर प्राप्त हों तथा किसी प्रकार का भेदभाव न हो।

राजनीतिक विकास की दूसरी वि-ोशता का सम्बन्ध राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता से है। क्षमता का सम्बन्ध राजनीतिक :ाक्ति की संरचनात्मक व्यवस्था की प्रभावकारिता से है।

विभिन्नीकरण राजनीतिक विकास की तीसरी वि-ोशता है। राजनीतिक संरचनाओं की प्रऔति का राजनीतिक विकास से गहरा सम्बन्ध है। यह प्रक्रियाओं के वि-ोशीकरण से सम्बद्ध हो जाता है। अतः पाई ने समानता, क्षमता और विभिन्नीकरण को राजनीतिक विकास का विकास संलक्षण कहा है। पाई समानता को राजनीतिक संस्औति से, क्षमता को आधिकारिक संरचनाओं से तथा विभिन्नीकरण को सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया से सम्बन्धित बताकर, राजनीतिक विकास को इनके आपसी सम्बन्धों के इर्द-गिर्द घूमती हुई अवधारणा बना देता है।[17]

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

आमण्ड और पावेल ने राजनीतिक विकास की वि-ोशताओं को भिन्न :ाब्दों में प्रस्तुत किया है। परन्तु पाई व आमण्ड पावेल द्वारा दिए गए विचारों में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। इन्होंने राजनीतिक विकास की निम्न वि-ोशताओं को माना है- 1. भूमिका विभेदीकरण 2. उप व्यवस्था स्वायत्तता और 3. लौकिकीकरण।

आमण्ड और पावेल मानते हैं कि संरचनाओं का विभिन्नीकरण इतना महत्वपूर्ण नही है जितना कि भूमिका का विभिन्नीकरण। आमण्ड पावेल का मत है कि भूमिका विभिन्नीकरण तब तक सम्भव नही हो सकता जब तक राजनीतिक व्यवस्था की उप-व्यवस्था को स्वायत्तता प्राप्त न हो। आमण्ड और पावेल ने राजनीतिक विकास की तीसरी वि-ोशता लौकिकीकरण की बतायी है तथा लौकिकीकरण का सम्बन्ध सही रूप में संस्औति से है। किसी राजनीतिक समाज में लौकिकीकरण का सम्बन्ध लोगों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन आने से है।[18]

डोड के अनुसार राजनीतिक विकास की चार प्रमुख वि-ोशताएं होती हैं- पहली, समानता के प्रति ऐसी सामान्य भावना जिससे राजनीति में भाग लेने और सरकारी पदों के लिए प्रतियोगिता करने के समान अवसरों की अनुमति रहे। दूसरी, राजनीतिक व्यवस्था में नीतियों का निर्धारण और उनको क्रियान्वित करने की क्षमता हो। तीसरी, राजनीतिक कार्यों का ऐसा विभिन्नीकरण और विशेषीकरण हो जो उनकी एकता की कीमत पर न हो। चतुर्थ, राजनीतिक प्रतिक्रियाओं का इस तरह लौकिकीकरण हो जिससे राजनीति धार्मिक उद्दे-यों और प्रभावों से पृथक रह सके।

राजनीतिक विकासः ल्यूसियन पाई का वि-लेशण

'राजनीतिक विकास' संकल्पना पर सबसे ज्यादा सन्तुलित विचार ल्यूसियन पाई के ही हैं। **पाई** ने अपने ग्रन्थ **'राजनीतिक विकास के पहलू'** में राजनीतिक विकास का वि-लेशण प्रस्तुत किया है। **पाई** के इस सम्बन्ध में मुख्य विचार निम्नलिखित हैं-

1. राजनीतिक विकास आर्थिक विकास की पूर्व :ार्त के रूप में:- ल्यू-ियन पाई का विचार है कि राजनीतिक विकास होने पर ही आर्थिक विकास की स्थिति बनती है, परन्तु राजनीतिक विकास की यह व्याख्या संतोशजनक नहीं है। राजनीतिक विकास को आर्थिक घटनाओं के साथ जोड़ना उचित नही है। यह भी आव-यक नही है कि जो गति राजनीतिक विकास की है, वही आर्थिक विकास की भी होगी। तृतीय वि-व के दे-ों पर यह व्याख्या लागू नही होती है।[19]

2. प्र-ासकीय तथा वैधानिक विकास के रूप में राजनीतिक विकासः- पाई का विचार है कि प्र-ासकीय तथा वैधानिक विकास ही राजनीतिक विकास है। किसी भी राज्य को तब तक राजनीतिक विकास की दृश्टि से परिपक्व नही माना जा सकता जब तक कि वह सार्वजनिक मामलों की व्यवस्था प्रभाव-ाली ढंग से लागू नहीं कर पाता है। नौकर-ाही का प्रभावी ढंग से संगठन तथा सार्वजनिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु उसकी प्रतिबद्धता किसी भी :ासन तंत्र के विकसित होने का मापदण्ड होता है। प्र-ासनिक विकास के लिए वैधानिक तथा धर्मनिरपेक्ष अवधारणाओं को शक्तिशाली बनाना आवश्यक होता है।[20]

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

3. राश्ट्र राज्य के परिचालक के रूप में राजनीतिक विकासः- इस दृश्टिकोण के अनुसार राश्ट्र राज्य का परिचलन ही राजनीतिक विकास है। अर्थात् राश्ट्र-राज्य जिन सिद्धान्तों तथा मान्यताओं पर कार्य करता है, वही राजनीतिक विकास का मापदण्ड होते हैं, राश्ट्र राज्य के परिचालन के लिए राश्ट्रीयता की भावना का होना आव-यक है और राश्ट्रीयता की भावना ही राजनीतिक विकास का मापदण्ड बन जाती है। इसीलिए राजनीतिक विकास को राश्ट्रवाद की राजनीति कहा जाता है। परन्तु इस दृश्टिकोण में यह कमी है कि राजनीतिक विकास के लिए राश्ट्रवाद तो है, परन्तु राश्ट्रवाद राजनीति का पयार्य नही हो सकता है। राजनीतिक विकास के लिए राश्ट्रवाद के अतिरिक्त अन्य बातों की भी आव-यकता होती है।[21]

4. औद्योगीऔत समाजों के लिए वि-िश्ट राजनीति के रूप में राजनीतिक विकासः-राजनीतिक विकास की एक अन्य व्याख्या यह है कि औद्योगीऔत समाजों के लिए राजनीति ही राजनीतिक विकास है। कोई भी समाज जब औद्योगीऔत हो जाता है तो उसे राजनीतिक रूप से संगठित करने के लिए वि-िश्ट राजनीति की आव-यकता होती है। औद्योगीऔत समाज के जो मापदण्ड होते हैं, वे राजनीतिक व्यवस्था के लिए लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं तथा राजनीतिक विकास में सहायक होते हैं। यह धारणा भी आर्थिक विकास को जोड़ने वाली होने के कारण अमान्य हो जाती है।[22]

5. राजनीतिक आधुनिकीकरण के रूप में राजनीतिक विकासः- कॉलमैन, लिपसैट आदि यह मानते हैं कि राजनीतिक विकास से अभिप्राय विकसित पि-चमी और आधुनिक दे-ों का अध्ययन है, लेकिन पाई जैसे विद्वान के अनुसार यह धारणा अमान्य है। क्योंकि पिछड़े और विकास-ील दे-ों की बहुत सी ऐसी परम्पराएं व सामाजिक ढाँचें होते हैं, जिन्हें वे किसी भी कीमत पर छोड़ने को तैयार नही होते हैं।[23]

6. राजनीतिक विकास जनता की लामबन्दी तथा सहभागिता के रूप में:- इसके अनुसार नागरिकों की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति निश्ठा तथा उसके संचालन में सक्रिय भागीदारी को ही राजनीतिक विकास कहा जाता है। उपनिवे-ावाद अथवा साम्राज्यवाद के ि-ंकजे में जकड़े दे-ों में नागरिकों द्वारा मुक्ति **'आन्दोलनों'** में अधिक से अधिक भागीदारी तथा चेतना को भी राजनीति विकास कहा जा सकता है।

पाई के अनुसार राजनीति में लोगों की अधिक से अधिक सक्रियता तथा भागीदारी राजनीतिक विकास की अभिव्यक्ति ही है।[24]

7. लोकतंत्र के निर्माण के रूप में राजनीतिक विकासः- राजनीतिक विकास का अर्थ है लोकतांत्रिक संस्थाओं और व्यवहारों की स्थापना। पाई के विचारानुसार विकास और लोकतंत्र को परस्पर आबद्ध और अभिन्न नही माना जाना चाहिए क्योंकि ये दोनों ही भिन्न बातें हैं।

8. राजनीतिक विकास स्थायित्व तथा व्यवस्थित परिवर्तन के रूप में:- राजनीतिक विकास की यह व्याख्या सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन से सम्बन्ध रखती है, यदि राजनीतिक व्यवस्था में उद्दे-यपूर्ण तथा व्यवस्थित परिवर्तन की क्षमता है, स्थायित्व है, तो इसे राजनीतिक विकास कहा जाएगा, केवल यथास्थिति को बनाए

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

रखना ही स्थायित्व नही है। इस दृश्टिकोण को स्वीकार करने मे मुख्य कठिनाई यह है कि परिवर्तन एक ऐसा प्र-न है जिस पर प्रबुद्ध समाज विचार कर सकता है।

9. गति-ीलता एवं :ाक्ति के रूप में राजनीतिक विकासः- इसके अनुसार हम राजनीतिक व्यवस्थाओं का मूल्यांकन इस आधार पर कर सकते हैं कि वे अपनी पूर्ण :ाक्ति का प्रयोग किस स्तर अथवा मात्रा में करती हैं पाई का कहना है कि इस प्रकार की व्याख्या को लोकतांत्रिक व्यवस्था पर ही लागू किया जा सकता है।

10. राजनीतिक विकास सामाजिक परिवर्तन की बहुआयामी प्रक्रिया के एक पहलू के रूप में:- इस दृश्टिकोण के अनुसार राजनीतिक विकास सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ अविच्छिन रूप से सम्बद्ध है। राजनीतिक विकास के अनेक रूप हो सकते हैं तथा ये सभी रूप एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। इसके अनुसार विकास का अर्थ कमोवे-ा आधुनिकीकरण है जो समय की आव-यकता को पूरा करता है।[25]

अन्ततः **ल्यू-ियन पाई** द्वारा दी गई व्याख्याओं से भी स्पश्ट होता है कि राजनीतिक विकास की अवधारणा की प्रऔति पर अत्यधिक मतभेद हैं। अतः राजनीतिक विकास के उपरोक्त विवेचन के प-चात यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें राश्ट्र की राजनीतिक व्यवस्था नये प्रकार के लक्ष्यों को पाने के लिए निरन्तर प्रयास करती है और अपनी राजनीतिक :ाक्ति को विकसित करते हुए प्रयासरत रहती है। इससे :ाासन व्यवस्थाओं की क्षमताओं में अद्भुत :ाक्ति का राजनीतिक विकास होता चला जाता है।

राजनीतिक विकास के अभिकरणः- निम्न अभिकरण राजनीतिक विकास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से भाग लेते हैं-

नेता किसी संकट की स्थिति में सत्ता में आते हैं, लेकिन क्रांतिकारी नेताओं में कुछ वि-िश्ट गुणों का होना आव-यक है। यदि उनका व्यक्तित्व प्रभाव-ाली है तो ये अव-य ही सफल होंगे। **राजनीतिक दल**, राजनीतिक विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं। राजनीतिक दलों के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व का विकास किया जाता है। राजनीतिक दलों का महत्व प्रजातांत्रिक व्यवस्था तथा साम्यवादी व्यवस्था दोनों में ही स्वयंसिद्ध है।

आधुनिक नौकर-ाही के द्वारा भी राजनीतिक विकास में परिवर्तन की भूमिका अदा की जाती है। **राश्ट्रीयता की भावना** के विकास और **एक राश्ट्रीय राज्य** के निर्माण से भी राजनीतिक विकास होता है। **राजनीतिक सहभागिता** भी राजनीतिक विकास में वृद्धि करती है। **परम्परागत सम्राट** राजनीतिक विकास को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त **सेना** भी राजनीतिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[26]

राजनीतिक विकास सिद्धान्त का महत्वः-

ऑमण्ड व पॉवेल की मान्यता है कि राजनीतिक विकास सिद्धान्त विभिन्न व्यवस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन में सहायक सिद्ध होता है तथा उसे अधिक सरल व स्पश्ट बना देता है। राजनीतिक विकास सिद्धान्त के

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

माध्यम से विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्गीकरण करने में सहायता प्राप्त होती है। विकास के पथ पर राजनीतिक व्यवस्था की अवस्था का आकलन कर उन्हें अतिविकसित, विकसित, विकासशील, अल्पविकसित व अविकसित आदि वर्गों में बाँटा जा सकता है।

रिग्स का मत है कि चाहे राजनीतिक विकास का सिद्धान्त सर्वमान्य सिद्धान्त में सक्षम न हो फिर भी इसके आधार पर तथ्यों का अधिकाधिक सामान्यीकरण किया जा सकता है। राजनीतिक विकास का उपागम विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के अर्थपूर्ण मापदण्डों के आधार पर तुलना करना संभव बना देता है अर्थात् राजनीतिक विकास उपागम का प्रयोग करके विकास को मापा जा सकता है। इस प्रकार **'राजनीतिक विकास'** सिद्धान्त एक उपयोगी उपागम सिद्ध हुआ है।

राजनीतिक विकास सिद्धान्त व विकास-ील राज्यों की राजनीतिः-

ज्ञातव्य है कि राजनीतिक विकास सिद्धान्त का उदय विकास-ील राज्यों के उदय के साथ ही इनकी राजनीतिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए हुआ था। इसने विकास-ील राज्यों की राजनीतिक व्यवस्था को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा साथ ही साथ विकास-ील राज्यों की राजनीतिक व्यवस्था की अस्थिरता व उथल-पुथल ने भी विकास सिद्धान्त की अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई है। स्पश्ट है कि दोनों का चोली-दामन का साथ है। राजनीतिक विकास सिद्धान्त ने विकास-ील दे-ों की राजनीतिक व्यवस्थाओं को विभिन्न वर्गों में विभाजित करके उनकी परस्पर तुलना की है जिसके कारण उन्हें अधिक विकास के लिए प्रेरणा प्राप्त हुई है।

भारत में राजनीतिक विकास

भारतीय राजनीतिक विकास में तथा पि-चम के राजनीतिक विकास में अन्तर पाया जाता है। भारत राजनीतिक बिकास की प्रक्रिया अपनाए जाने के बाद भी परम्परावादी दे-ा माना जाता है। यहाँ राजनीतिक विकास नियोजित तरीके से सम्पन्न करने के लिए एक लम्बी प्रक्रिया अपनायी गई है। भारत में राजनीतिक विकास लोकतांत्रिक, समाजवादी, धर्म निरेपक्ष, विकेन्द्रीकरण :ाासन तंत्र के साथ-साथ जनता की सम्पूर्ण सहभागिता बनाए रखने में सफल हुआ है। स्वतंत्रता के 6 द-ाक व्यतीत होने जा रहे हैं। परन्तु भारत ने राजनीतिक विकास की लम्बी प्रक्रिया को अब तक बनाए रखा है तथा समाज की जनसहभागिता जिसमें समाज, व्यक्ति, वर्ग और समूह अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। भारत में राजनीतिक समानता, प्र-ाासनिक समानता और सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए राजनीतिक विकास पूरा प्रयास कर रहा है। यहाँ राजनीतिक दल, राजनीतिक विकास करने में सहायक रहे हैं।

भारत में राजनीतिक सत्ता व विकेन्द्रीकरण तथा पंचायत राज व्यवस्था को अपना कर राजनीतिक विकास की प्रक्रिया को मजबूत किया है। जिसमें महिलाओं को आरक्षण देकर स्त्री पुरूशों के बीच राजनीतिक समानता देकर राजनीतिक विकास किया है। भारतीय राजनीतिक विकास में आन्तरिक लोकतंत्र की समस्याएं भी उत्पन्न

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

हुई हैं। इन समस्याओं पर नियंत्रण पाने के लिए भारतीय :ाासन तंत्र समय-समय पर अपनी क्षमता का प्रद-ान करने से मजबूत स्थिति में आने में सफल रहा है।[27]

अन्त में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक विकास सिद्धान्त का नि-चय ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आज भी यह सिद्धान्त निरन्तर विकास की ओर उन्मुख है।

जिस प्रकार राजनीतिक विकास सिद्धान्त ने नवोदित राज्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है उसी प्रकार से राजनीतिक विकास ने महिलाओं को भी प्रभावित किया है। पंचायती राज व्यवस्था राजनीतिक विकास का ही परिणाम है और पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा महिलाओं को राजनीतिक क्रिया-ीलता निभाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है जिससे उनमें राजनीतिक जागृति भी उत्पन्न हुई है। तथापि अभी और अधिक प्रयास किए जाने की आव-यकता है जिससे महिलाएं भी राजनीतिक विकास की मुख्यधारा से जुड़कर अपना विकास करने में सक्षम हो सकेंगी।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 धर्मवीर, ''राजनीतिक समाज-ाास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0 सं0 119, 1993।

2. गेना सी0बी0, ''तुलनात्मक राजनीति'', विकास पब्लि-िंग हाऊस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, प्र0 सं0- 185, 2003।

3. गेना सी0बी0, ''तुलनात्मक राजनीति'', विकास पब्लि-िंग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, पृ0 सं0 185, 2003।

4. स्नबपंद ँण च्लम ;मकण्द्धए :ब्वउउनदपबंजपवद ंदक च्वसपजपबंस क्मअमसवचउमदज-ए च्तपदबमजवदए च्तपदबमजबद न्दपअमतेपजल च्तमेए 1963ण चण 19ण

5. :ार्मा प्रभुदत्त, ''तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं'', कालेज बुक डिपो, जयपुर, प्र0 97।

6. चैम्बर्स विलियम, जोसेफ लापालोम्बारा एवं माइरन द्वारा सम्पादित, ''पॉलिटिकल पार्टीज एण्ड पॉलिटिकल डेवलपमेण्ट'', प्र0 88।

7. बिल्लौरे डी0के0, ''आधुनिक राजनीतिक सिद्वान्त'', पृ0 सं0 87-88।

8. मैर्केजी डब्लू जे0 एम0, ''राजनीति और सामाजिक विज्ञान'', पृ0 सं0 344।

9. जाग्वाराइव, ''पॉलिटिकल डेवलेपमेण्टः ए जनरल थ्योरी एण्ड ए लैटिन अमेरिकन केस स्टडी'', न्यूयार्क हार्पर एण्ड रोड, 1973, पृ0 सं0 193।

10. त्पहहे थ्ॅण्ए पद श्रवेमची स्ंचंसवउइंतं ;मकद्धरू ष्ठनतमंबनतंबल च्वसपजपबंस क्मअमसवचउमदजष्ए चण 139.140ण

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

11. :ार्मा पी0डी0, ''तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं'', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, पृ0 सं0 981

12. :ार्मा पी0डी0, उपरोक्त।

13. गेना सी0बी0, ''तुलनात्मक राजनीति'', विकास पब्लि-िंग हाऊस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, पृ0 सं0 -189, 2003।

14. कोली सी0एम0, ''आधुनिक राजनीतिक सिद्वान्त एवं विश्लेशण'', साहित्यगार चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृ0 सं0 247, 2001।

15. :ार्मा पी0डी0, ''तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं'', कॉलेज बुक डिपों, नई दिल्ली, पृ0 सं0 -108।

16. गेना सी0बी0, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 198।

17. गेना सी0बी0, ''तुलनात्मक राजनीति'', विकास पब्लि-िंग हाऊस प्रा0लि0, नई दिल्ली, पृ0 सं0 191, 2003।

18. गेना सी0बी0, पूर्वोक्त पृ0 सं0 -193, 194, 195।

19. :ार्मा पी0डी0, ''तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं'', कॉलेज बुक डिपों, जयपुर, पृ0 सं0 98।

20. :ार्मा, पी0डी0, उपरोक्त, पृ0 सं0 100।

21. ल्यूसियन डब्लू पाई, ''राजनीतिक विकास की अवधारणा'' प्र0 33, 45।

22. गेना सी0बी0, ''तुलनात्मक राजनीति विकास'' पब्लि-िंग हाऊस प्रा0 लि0, नई दिल्ली, पृ0 सं0 186।

23. गेना सी0बी0, उपरोक्त, पृ0 सं0 186।

24. ल्यूसियन डब्लू पाई, ''राजनीतिक विकास की अवधारणा'', प्र0 33, 45।

25. कोली सी0एम0, ''आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त एवं वि-लेशण'', साहित्यगार, जयपुर, पृ0 सं0 , 250-251, 2001।

26. कोली सी0एम0, ''आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त एवं वि-लेशण'', साहित्यगार जयपुर, पृ0 सं0 263, 264, 265, 2001।

27. कोली सी0एम0, ''आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त एवं वि-लेशण'', साहित्यगार, जयपुर, पृ0 सं0 271, 2001।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.